Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 4, No. 2, November-December 2026

स्व-सहायता समूह की महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका: दंतेवाड़ा जिले का अध्ययन

डॉ. देवाशीष हालदार[1]
रोशनी धार[2]
[1]सहायक अध्यापक, शोध निर्देशक, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंडागांव, छत्तीसगढ़
[2]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोंडागांव, छत्तीसगढ़
Email- dharroshni802@gmail.com

शोध सारांश - महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण देश की आर्थिक प्रगति एवं सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान समय में महिलाओं का सशक्तीकरण समावेशी विकास एवं आत्मनिर्भर समाज के निर्माण का एक प्रमुख निर्धारक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को आर्थिक निर्भरता, सीमित रोजगार के अवसर, शिक्षा की कमी तथा वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के समाधान में स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत, ऋण, स्वरोजगार, बैंकिंग सुविधाओं तथा सामूहिक निर्णय प्रक्रिया से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दंतेवाड़ा जिले का चयन किया गया है। अध्ययन के अंतर्गत दंतेवाड़ा जिले के 20 स्वयं सहायता समूहों से कुल 100 महिला सदस्यों का चयन नमूने के रूप में किया गया है। इन महिलाओं से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर उनके सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, स्व-सहायता समूहों में शामिल महिलाओं में 40 प्रतिशत महिलाएँ अनुसूचित जनजाति, 33 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग, 17 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 10 प्रतिशत सामान्य वर्ग से संबंधित हैं। शैक्षणिक स्थिति के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 20 प्रतिशत महिलाएँ अशिक्षित, 35 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षित, 18 प्रतिशत माध्यमिक शिक्षित, 20 प्रतिशत हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी तथा 7 प्रतिशत स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित हैं।पारिवारिक स्थिति के अनुसार 63 प्रतिशत महिलाएँ एकल परिवार तथा 37 प्रतिशत महिलाएँ संयुक्त परिवार से संबंधित हैं। वहीं आवासीय स्थिति के अंतर्गत 40 प्रतिशत महिलाएँ कच्चे मकान, 28 प्रतिशत पक्के मकान, 17 प्रतिशत अर्धकच्चे मकान तथा 15 प्रतिशत किराये के मकान में निवास करती हैं।

आर्थिक स्थिति के विश्लेषण से पता चलता है कि स्वयं सहायता समूह का सदस्य बनने से पूर्व 65 प्रतिशत महिलाओं के पास बैंक खाते थे, जो सदस्य बनने के पश्चात बढ़कर 90 प्रतिशत हो गए। इस प्रकार बैंक खाताधारक महिलाओं की संख्या में 25 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई। इसी प्रकार मासिक आय के विश्लेषण में 2,000 से 3,000 रुपये आय वर्ग की महिलाओं की संख्या 53 से घटकर 15 रह गई, जबकि 4,000 से 8,000 रुपये आय वर्ग की महिलाओं की संख्या 19 से बढ़कर 45 हो गई। इसके अतिरिक्त 10,000 रुपये से अधिक आय प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या 4 से बढ़कर 10 हो गई। ये आँकड़े महिलाओं की आय के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन को दर्शाते हैं। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। महिलाओं में बैंकिंग सेवाओं के प्रति जागरूकता, बचत की प्रवृत्ति तथा आय अर्जित करने के अवसरों में वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने तथा उनके सामाजिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मुख्य शब्द: स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तीकरण, आर्थिक आत्मनिर्भरता, ग्रामीण महिलाएँ, बैंकिंग सुविधाएँ, मासिक आय

1 **प्रस्तावना-**

भारत में महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण समावेशी विकास और आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण आधार है किसी भी देश में महिलाओं का समाज में एक महत्वपूर्ण घटक है। आजादी के बाद हमारे देश में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन के बहुत से कार्यक्रम चलाए गए। लेकिन इन कार्यक्रमों के अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुई। क्योंकि इन कार्यक्रमों में गरीबों को वित्तीय सहायता देने के साथ-साथ यह आवश्यक है कि उन्हें आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिए सशक्तिकरण के साधन प्रदान किए जाएं भारत वर्ष में शुरू से महिलाएं पुरुष प्रधान समाज में अपनी आवश्यकताओं के लिए पुरुषों पर निर्भर रही है और इसलिए महिलाओं में छपी प्रतिभागी भी आजीवन सुषुप्त अवस्था में ही रह जाती हैं। अकेली महिला के लिए अपनी सीमाओं से बाहर निकाल कर कुछ कर पाना और आत्मनिर्भर बनना आसान नहीं है ।आज भी हमारे देश के ग्रामीण निर्धन जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग अपनी आकस्मिक जरूरत को पूरा करने के लिए साहूकारों पर निर्भर है यह साहूकार इन गरीबों के अनपढ़ होने का भरपूर फायदा उठाकर न केवल उन्हें अपना आजीवन कर्जदार बनाकर उनका शोषण करते हैं बल्कि कभी-कभी उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी को भी पीने के चक्रव्यूह में हमेशा के लिए फंसा देते हैं ऐसे में उनकी छोटी-छोटी एवं बार-बार आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक वैकल्पिक प्रणाली की अवस्था स्थापित की गई है जिसमें स्वयं सहायता समूह का नाम दिया गया जो महिलाओं किरण के रूप में छोटी-छोटी जरूरत को पूरा करने के साथ-साथ महिलाओं की सशक्तिकरण का एक प्रबल माध्यम भी है यहीं पर सोशल सेक्टर समूह के महत्व स्पष्ट होती है समूह की महिलाओं में आपसी बातचीत से धीरे-धीरे विश्वास जाता है और छोटी-छोटी बच्चे देकर भी अपनी और अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं जिससे उनके जीवन यापन कैसे बढ़ता है निर्धनों में बचत करने की जरूरत नहीं होती। जिससे उधार लेना उनकी मजबूरी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को लंबे समय से आर्थिक निर्भरता, सीमित रोजगार अवसर, शिक्षा की कमी, वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच तथा सामाजिक निर्णयों में कम भागीदारी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा है। गरीब महिलाएं जिनके पास संसाधनों का आधार नहीं है वे अशिक्षित हैं सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हैं उनके आकस्मिक रन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्व-सहायता समूह सर्वप्रथम उपयुक्त साधन है ऐसी स्वयं सिद्ध सामाजिक मान्यता है कि महिलाएं समाज में श्रेष्ठ बचत करता होती हैं एवं ईमानदारी पूर्वक उदार वापस करने की प्रवृत्ति रखती हैं इसलिए पुरुषों की तुलना में महिलाओं को स्वयं सहायता समूह सफलतापूर्वक संचालित एवं विकसित किया जाता है। महिला सशक्तिकरण जीवन के विविध क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा निर्णय प्रक्रिया में साझेदारी से है इसमें सामाजिक आर्थिक राजनीतिक संस्कृति इत्यादि सभी विषयों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होता है यह महिला सशक्तिकरण महिलाओं को अपने जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णय स्वतंत्र रूप से लेने, परिवार के आर्थिक एवं सामाजिक मामलों में सक्रिय भागीदारी निभाने तथा घरेलू गतिविधियों और पारिवारिक निर्णयों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करता है। महिला सशक्तिकरण को राजनीति प्रशासन अर्थव्यवस्था व्यापार वाणिज्य इत्यादि प्रतिनिधित्व के रूप में भी आंका जाता है इसके तहत महिलाओं में सुरक्षा की भावना मार्केट में मृत्यु दर से संबंधित धर्म में काम इत्यादिक रूप में देखा जाता है।

स्व -सहायता समूह ग्रामीण गरीब महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाने में योग्यता समूह के रूप मे सिद्ध हुआ है इससे न केवल वे अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम हुई है । बल्कि घर की चार दीवारों से बाहर निकाल कर विभिन्न

विकास पर कार्यक्रम में भागीदारी करने में भी सक्षम हुई है समूह की समर्थकों का विश्वास है कि इससे लोगों में महिलाएं संगठित व सक्रिय बनने क्षमता जागरूक हुई है। इसके माध्यम से वे अपनी सामाजिक आर्थिक समस्याओं को हल करने में सक्षम हुई हैं। भारत में महिलाओं को विशेषता निर्धन महिलाओं को निर्धारित सीमाओं में ही रखा जाता है तथा उन्हें घर से बाहर जाने के लिए अर्थात विभिन्न विकास पर कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया जाता लेकिन समूह की सदस्य के रूप में वह अपनी समस्याओं को उलझा कर वह गतिविधियां करती हैं जो उन्होंने पहले भी कभी नहीं की थी इसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां करती हैं ऐसे व्यक्तियों से बात करते हैं। जिनसे उन्होंने पहले कभी नहीं की थी परिवार से बाहर के दायरे में संबंधों को संबंधों का विकास करते हैं उन स्थानों पर जाती है जहां वे पहले कभी गए ही नहीं। गरीब महिलाओं के साथ यदि शारीरिक रूप से शोषण दुर्व्यवहार होता है तो ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जिसके पास भी जा सके। ऐसी स्थिति में समूह सदस्यों को नैतिक सहायता प्रदान करता है समूह के माध्यम से महिलाएं एक दूसरे से नियमित रूप से मिलती हैं विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श करती हैं तथा उनके निदान के लिए मार्ग का उपयोग करती हैं इससे उनके जीवन में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है इस प्रकार की सहायता से महिलाएं अपने-अपने परिवारों में और मजबूत बन जाती हैं इसके माध्यम से महिलाएं विवाह समारोहों तथा परिवार की सामाजिक आयोजनों पर अपने सदस्यों को आमंत्रित करती हैं इस प्रकार जहां अपने आमंत्रित व्यक्ति केवल पति या माता-पिता के सगे संबंधी होते थे अब महिलाओं के भी अपने अतिथि होते हैं अधिकांश ग्रामीण महिलाएं अपने घरों व खेतों से दूर कहीं नहीं जाती थी यदि वे गांव से बाहर जाती भी हैं तो उनके साथ पुरुष आवश्यक होता है समूह की गतिविधियों में अक्सर महिलाओं को अपने घर तथा खेत से दूर जाना पड़ता है। हालांकि प्रारंभ में उन्हें हिचहिचकिचाहट होती है बाद में उन्हें स्वतंत्रता की भावना को अनुभूति होने लगती है जिसका उन्हें पहले अनुभव नहीं था।

आर्थिक सशक्तिकरण केवल ऋण उपलब्ध कराने से पूर्ण नहीं होता उसे बाजार ब्रांड और विस्तार की आवश्यकता होती है यह स्व-सहायता समूह इसी सोच का विस्तार करता है सामुदायिक स्वामित्व वाले खुदरा मंच जहां महिला उत्पादकों को प्रत्यक्ष बाजार उपलब्ध कराया जाएगा।

मिशन शक्ति- सशक्तिकरण बिना सुरक्षा और संस्थागत सहयोग के अधूरा है मिशन शक्ति के लिए 3,605 करोड़ का प्रावधान किया गया है इसके समेकित संरचना में शामिल है संकटग्रस्त महिलाओं के लिए वन स्टॉप सेंटर संस्था का सुरक्षित से जागरूकता एवं सशक्तिकरण अभियान और संवेदनशील समूह के लिए सहायता ढांचा यह दृष्टिकोण सुरक्षा और अवसर को एकीकृत रूप में आगे बढ़ने का प्रयास करता है यह सभी संकेत देते हैं की नीति अब सुरक्षा और अवसर को साथ लेकर चल रहे है। लंबे समय तक महिलाओं के लिए योजनाएं मुख्यतः पोषण वृत्तीय स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा तक सीमित रही है जीवनी संदेश अत्यंत आवश्यक का परंतु बजट का एक व्यापक परिचय परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है महिलाओं को केवल लाभार्थी नहीं बल्कि विकास की प्रेरक शक्ति के रूप में देखना शैक्षिक अवसर रचना उधम सृजन मंच बाजार एकीकरण और संस्थागत ढांचे सभी तत्व मिलकर संकेत देते हैं कि महिलाएं आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की सही निर्माता है।

विश्व बैंक रिपोर्ट के अनुसार रोजगार महिलाओं की आर्थिक क्षमता को उजागर करना और अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देना इंगित करती है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्ति करना केवल उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है बल्कि व्यापार की स्तर पर अधिक उत्पादक रोजगार सृजन और समावेशी आर्थिक विकास में भी योगदान देता है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि महिलाएं भारत के विकास के प्रमुख प्रेरक शक्ति हैं 15 अगस्त 2025 को लाल किले से दिए

गए उनके भाषण के बाद से ही प्रधानमंत्री की यह दृष्टिकोण देश के विभिन्न केंद्रीय में लगातार परिलक्षित हो रहा है और बजट 2026-27 की घोषणा इस सत्य की ओर और भी पुष्टि करें प्रतीत होती हैं केंद्रीय बजट 2026-27 में केंद्रीय ने दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण अजीवीका मिशन के कार्यक्रम घटक में 2,880 रुपए करोड़ की वृद्धि हुई है क्योंकि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता भारत सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।

हाल ही में घोषित बजट में शी-मार्ट की घोषणा की गई है जिसका उद्देश्य स्व सहायता समूहों समूह से जुड़ी महिलाओं को सशक्त बनाना है इसके तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में बाजार स्थापित किए जाएंगे ताकि पशुपालन कैसी और अपने गतिविधियों से जुड़ी महिलाएं अपने उत्पाद सीधी उपभोक्ताओं को भेज सकें और आजीविका स्तर से आगे बढ़कर उद्यमिता की ओर अग्रसर हूं पशुपालन मत्स्य पालन और डेयरी जैसे क्षेत्र के लिए ऋण आधारित सब्सिडी योजना शुरू की गई है यह पहला आधुनिक उपकरणों के उपयोग पर ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित करेगी इसके अतिरिक्त ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्र में लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए 10,000 करोड़ का एसएमई विकास कोर्स स्थापित किया गया किया जाएगा। ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से वित्तीय सहायता तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस दिशा में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के बजट में लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि करते हुए इसे ₹17,280 करोड़ कर दिया गया है। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वरोजगार, कौशल विकास, आजीविका के विभिन्न साधनों तथा बाजार से जोड़कर उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना है। इसके अतिरिक्त, मत्स्य पालन क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए ब्लू रिवोल्यूशन (नीली क्रांति) के अंतर्गत ₹2,761.80 करोड़ का प्रावधान किया गया है। इससे मत्स्य पालन से जुड़े व्यवसायों को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार एवं आय अर्जित करने के नए अवसर सृजित हो सकते हैं। साथ ही, सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए ₹880 करोड़ का प्रावधान किया गया है, जिससे महिलाएँ खाद्य प्रसंस्करण से संबंधित छोटे एवं लघु उद्यम स्थापित कर अपनी आजीविका को बेहतर बना सकती हैं। इसके अतिरिक्त, 'लखपति दीदी' योजना के विस्तार के माध्यम से वर्ष 2027 तक तीन करोड़ महिलाओं को प्रतिवर्ष एक लाख रुपये से अधिक की आय अर्जित करने में सक्षम बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस प्रकार, सरकार की ये पहलें ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने, स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने तथा परिवार एवं समाज में उनकी निर्णय लेने की क्षमता और भागीदारी को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

स्व सहायता समूह से आशय- स्व सहायता समूह एक इसमें स्वैच्छिक संगठन है। जिसमें समूह के सदस्य अपने -आप में जितनी भी बचत सरलता से कर सकते हैं इसमें उनका अंशदान, उत्पादक ,उपभोग, और आपातकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण के रूप में देने के लिए परस्पर सहयोग करते हैं स्व- सहायता समूह की अवधारणा गरीब व्यक्तियों द्वारा विशेष रूप से अपेक्षित क्षेत्र में स्वयं के प्रयास का एक रूप है समूह मुख्य रूप से स्थानीय सेठ साहूकारों के चुंगल से बचने के विकल्प के रूप में उत्पन्न हुई स्व-सहायता समूह सम्मान सामाजिक, आर्थिक स्थिति वाले 10 से 20 लोगों का एक समूह है जो अपने गरीबी दूर करने हेतु सामाजिक सामूहिक रूप से आमदनी से थोड़ी-थोड़ी बचत करते हैं तथा बजट के माध्यम से बैंक से जोड़कर सूक्ष्म ऋण प्राप्त कर अपने जीवन की दशा को सुधारते हैं स्व- सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति को उच्च करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

स्व-सहायता समूह का इतिहास- स्व- सहायता समूह का आरंभ बांग्लादेश की अर्थशास्त्र प्रोफेसर मोहब्बत यूनुस द्वारा 1986 में की गई थी उन्होंने बांग्ला देश के गरीबों की समस्या को दूर करने के लिए स्व सहायता समूह का गठन किया और यह सफलतापूर्वक कार्य भी कर रही है मोहम्मद यूनुस ने ग्रामीण बैंक के माध्यम से गरीब महिलाओं को छोटे-छोटे देकर आदमी पर बनाने की शुरुआत की बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं के द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की योजना बनाई गई लेकिन भारत में वास्तविक प्रयास 1991-92 के बाद बैंक की 7 वर्ष तक समूह को जोड़ने के बाद किया गया भारत के तमिलनाडु में 1992 से शुरू किया गया जबकि भारत समेत विश्व के 29 देश में सबसे ज्यादा समूह कार्य कर रहा है भारत में स्वच्छता समूह की विचारधारा को सरकार द्वारा कई योजनाओं से जोड़ा गया जिसमें मुख्य रूप से स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना है जिसका लक्ष्य स्वरोजगार को बढ़ावा देना तथा गरीब परिवारों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना है ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा स्वच्छता समूह भारत में प्रारंभ करने के लिए नेशनल कांफ्रेंस में जून 2001 में लिया गया था और प्रत्येक गांव में एक सूचना समूह संचालित किए जाने पर विशेष रूप से जोड़ दिया गया था।

स्व-सहायता समूह का उद्देश्य-

- ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार करना।
- महिलाओं की शिक्षा स्वास्थ्य आत्मविश्वास एवं सामाजिक भागीदारी पर समूह के प्रभाव का अध्ययन करना
- महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना तथा बैंकिंग एवं वित्तीय सुविधाओं तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना।
- महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाना।

शोध प्रविधि - प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु दंतेवाड़ा जिला का चुनाव किया गया है यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है प्राथमिक आंकड़े स्वयं कार्यस्थल पर जाकर मूल स्रोतों एवं साक्षात्कार अनुसूचित द्वारा एकत्रित किए गए हैं जबकि द्वितीयक आंकड़े दंतेवाड़ा जिले के स्व सहायता समूह की योगदान से संबंधित प्रकाशित आ प्रकाशित पुस्तक को शुद्ध शोध पत्र पत्रिकाओं आदि से एकत्र कर प्रयोग किए गए हैं।

2 साहित्य का पुनरावलोकन

- **कलावती त्रिपाठी 2000-** ने अपने अध्ययन में सभी नागरिकों को समानता के साथ समान व्यवहार करने की स्वतंत्रता प्रदान करना प्रजातंत्र का एक आधारभूत सिद्धांत बताया है यहां सशक्तिकरण और भागीदारी एकता तथा सामाजिक विकास आदि प्रजातंत्र के लिए आवश्यक है समाज सभी सदस्यों को अवसरों की स्वतंत्रता अपने अधिकारों को व्यवहार मिलने की योग्यता तथा जहां आप रहते हैं वहां की सामुदायिक मामलों में सती रूप से भागीदारी करने की जिम्मेदारी आदि प्रजातंत्र में सम्मिलित है लिंग समानता और सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक कार्यों में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी विकास को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।
- **राधा कृष्ण राव 2001** ने अपने अध्ययन में विश्व बैंक की नीति केरल में ग्रामीण zxsaगरीबों के उन्मूलन में सेक्सी हो रही है तथा पारिवारिक उपभोग में आवश्यक वृद्धि कर रही है राज्य में साक्षरता की विस्तार के लिए ईसाई मिशन योजना द्वारा शिकारी शिक्षा संस्थानों को उच्च अधिकार के मामले में भी मजबूत है सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्ट्राइडर के फलों के पे मैं ने कहा कि केरल सामाजिक क्षेत्र में अधिक स्वास्थ्य सुविधाएं देने की शिक्षा के क्षेत्र में योग्य है।

- **अलका श्रीवास्तव 2006**-के शब्दों में छत्तीसगढ़ उत्तर प्रदेश बिहार के तीन-तीन जिलों के 50 स्वयं सहायता समूह के पांच सदस्यों के अध्ययन से पता चला कि स्व सहायता समूह के सदस्यों पर सामाजिक आर्थिक प्रभाव पड़ता है बैंक को आय प्राप्त होता है निर्धन सदस्यों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है अतः स्वाध्याय समूह बैंक लिंकेज कार्यक्रम गरीबों के लिए एक प्रभावशाली माध्यम है जो गरीबों को गरीबी से निकलता है।
- **जॉन जोसेफ सेंटियागो 2007**-के अनुसार स्व-सहायता समूह के द्वारा महिलाओं का विभिन्न कार्यों में सक्रिय विशेष रूप से लघु वित्तीय कार्यक्रम में उनके सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव को मालूम करने के लिए स्वयं सहायता समूह में आने से पहले वह स्वयं के आने के बाद का विशेषण करने पर पाया कि गांव की महिलाएं के समूह में आने के बाद बचत में बढ़ोतरी आई में बढ़ोतरी संपत्ति का निर्माण उपभोग मैं बढ़ोतरी व साथ ही साथ महिलाओं की सोच विचार व व्यवहार में वाकई परिवर्तन देखने मिला महिलाओं का न केवल पारिवारिक बल्कि सामुदायिक सशक्तिकरण भी हुआ हैं।
- **सुभाष शर्मा 2010**-छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद राज्य सरकार ने छत्तीसगढ़ से ग्राम पंचायत में महिलाओं का 50% आरक्षण दिए जाने से उनके राजनीतिक नेतृत्व में वृद्धि हुई है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक व शैक्षणिक क्षेत्र में जन जागरूकता बढ़ने से उनके आत्महत्या वृद्धि हुई है लागू हुआ फोटो उद्योगों के माध्यम से उनसे राज्य व केंद्र सरकार की अनेक कल्याणकारी व रोजगार मूल्य के योजनाओं से लाभ लेने की प्रवृत्ति विकसित हुई है जिससे स्वास्थ्य समूह भी एक महत्वपूर्ण योजनाव कार्यक्रम।
- **विमला देवी 2020**-अपनी सोच पत्र में ग्रामीण महिलाओं की सशक्त विकास में विश्वास सहायता समूह के योगदान पर प्रकाश डाला है इस उट पत्र पर ग्रामीण महिलाओं को अपने घर बनाने में नेतृत्वकारों का विकास करने वाला सफल माध्यम बन गया है समूह के माध्यम से महिलाएं संगठित होकर सामाजिक बुराई जैसे घरेलू हिंसा लैंगिक भेदभावपूर्ण हत्या आती बुराइयों का विरोध कर रही हैं।
- **कुमारी सपना 2021**-स्व - सहायता समूह द्वारा चलाई जाने वाली सभी प्रमुख गतिविधियां जैसे बचत ऋण इस अर्जन हेतु प्रशिक्षण व रोजगार आदि आर्थिक क्षेत्र से जुड़ी है वस्तुतः महिला सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आर्थिक दृष्टि से होना है जो उनमें स्वावलंबन और आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करता है।
- **डॉ अर्चना सेठी, ओमप्रकाश वर्मा 2022**-ने अपने अध्ययन में छत्तीसगढ़ में स्व सहायता समूह क्षेत्र समूह के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक एवं आरती सशक्तिकरण का अध्ययन किया है कि वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में विशेष का ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं ने अपने मेहनत और लगन के बल पर यह साबित कर दिया है कि स्व सहायता समूह से जोड़कर एक नया मुकाम हासिल किया जा सकता है प्रसिद्ध अध्ययन में छत्तीसगढ़ के दुर्ग द्वारा राजनांदगांव जिले के स्व सहायता समूह का महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण पर प्रभाव एवं संतुष्टिक अध्ययन किया गया है स्व सहायता समूह समूह का कार्य स्व सहायता समूह का निर्माण अवधि स्व-सहायता समूह का कार्य सदस्यों की संख्या सदस्यों की शिक्षा समूह द्वारा की दिए गए ऋण का आकार समूह द्वारा दिए गए ऋण का ब्याज दर बचत आदि आई को धनात्मक रूप में प्रभावित कर रहे हैं।
- **डॉ सरिता 2021**-इन्होंने अपने अध्ययन में बताया है कि प्राचीन काल से ही महिला एक अच्छे प्रबंधक के रूप में कार्य करती आई हैं क्योंकि घर रूपी इकाई या संस्था का प्रबंध केवल अपनी आर्थिक स्थिति सामाजिक व पारिवारिक स्थिति अधिक आधार पर करती है बल्कि आपसी सामंजस्य और तनावपूर्ण शक्ति को ध्यान में रखकर प्रबंधन के लिए कक्षा उदाहरण प्रस्तुत करती है किसी भी समाज के लिए समग्र एवं संतुलन विकास के लिए महिलाओं को विकास के

मुख्य धारा से जोड़ना आवश्यक होता है महिलाएं एक तरह से सामाजिक संरचना की होती हैं खाने का तात्पर्य है कि महिलाएं समाज के एक महत्वपूर्ण अंग होते हैं और उनके चित्र के बिना समस्या कल्पना भी नहीं की जा सकती।

- **अंकित 2026**-ने अपने अध्ययन में बताया है कि महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण किसी भी देश के लोकतांत्रिक एवं समावेशी विकास के आधारशिला होती है उन्होंने बताया है कि ग्रामीण भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति निर्भरता सीमित शिक्षा वित्तीय संसाधनों तक काम पहुंचे तथा सामाजिक रूढ़ियों उनके समग्र विकास संपादक उत्पन्न करती हैं इन चुनौतियों की समाधान हेतु स्वयं सहायता समूह एक प्रभाव प्रभावी सामुदायिक मॉडल के रूप में उपग्रह है राष्ट्रीय ग्रामीण राजीविका मिशन तथा उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण राज्य कमीशन के माध्यम से स्वयं सहायता समूह समूह का व्यापक विस्तार हुआ है जिसने ग्रामीण महिलाओं को बच्चा ट्रेन स्वरोजगार कौशल विकास तथा सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान किए हैं।
- **डॉ.अनीता शर्मा स्वीटी चंद्राकर 2024**-मैं अपने अध्ययन में बताया है कि रायपुर की महिला स्व सहायता समूह की सदस्यों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन उनकी जीवन में स्तर आय और बचत पैटर्न पर केंद्रित है इस अध्ययन से पता चलता है की स्वयं सहायता समूह में शामिल होने से महिलाओं की आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण सुधार हुआ है स्वयं सहायता समूह सदस्य न केवल सूक्ष्म ऋण प्राप्त कर रही है बल्कि वह विभिन्न आय सृजन गतिविधियों में भी सक्रिय के रूप से भाग ले रहे हैं इससे न केवल उनके आई में वृद्धि हुई है बल्कि उनके आत्म-विश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ है स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह में भाग लेने वाले महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पहचान में सुधार हुआ है जिससे वे अधिक सशक्त और सम्मानित महसूस कर रहे हैं।

3 अध्ययन का क्षेत्र एवं आंकड़ों का विश्लेषण- दंतेवाड़ा जिला छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है। इस जिले का गठन वर्ष 1998 में हुआ था। पूर्व में यह बस्तर जिले की तहसील था। वर्तमान में यह बस्तर संभाग के अंतर्गत आता है। जिले का कुल क्षेत्रफल 3,410.50 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 2,83,479 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 1,40,094 तथा महिलाओं की संख्या 1,43,385 है। जिले का लिंगानुपात प्रति 1,000 पुरुषों पर 1,023 महिलाएँ है। जिले की कुल साक्षरता दर 42.12 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 51.92 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 32.54 प्रतिशत है।

दंतेवाड़ा जिले में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिला सदस्यों का चयन किया गया है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करने हेतु उनकी जातिगत संरचना, शैक्षणिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति एवं सामाजिक सहभागिता जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में 20 स्व-सहायता समूहों से चयनित 100 महिला सदस्यों से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर उनकी सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। सर्वप्रथम महिलाओं का जाति वर्ग के आधार पर वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है।

स्व सहायता समूह में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति-:
तालिका क्रमांक 1

जाति वर्ग	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
ST	40	40%
SC	17	17%
OBC	33	33%
GEN	10	10%
योग	100	100%

स्वयं सहायता समूह में कार्यरत महिला सदस्यों की जाति अनुसार वर्गीकरण

उपर्युक्त तालिका से प्राप्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह में कार्यरत कुल 100 महिला सदस्यों में सर्वाधिक 40 प्रतिशत महिलाएँ अनुसूचित जनजाति (ST) वर्ग से संबंधित हैं। वहीं 33 प्रतिशत महिलाएँ अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC), 17 प्रतिशत महिलाएँ अनुसूचित जाति (SC) तथा सबसे कम 10 प्रतिशत महिलाएँ सामान्य वर्ग (GEN) से संबंधित हैं।इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों में अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं की भागीदारी सर्वाधिक है।

तालिका क्रमांक 2

स्व सहायता समूह में कार्यरत महिला सदस्यों की शैक्षणिक स्थिति का विवरण

क्र	शिक्षा का स्तर	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	20	20%
2	प्राथमिक	35	35%
3	माध्यमिक	18	18%
4	हाई स्कूल हाई सेकेंडरी	20	20%
5	स्नातक स्नातकोत्तर	7	7%
6	योग	100	100 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं में सर्वाधिक 33 प्रतिशत महिलाएँ प्राथमिक शिक्षित हैं। वहीं 22 प्रतिशत महिलाएँ अशिक्षित हैं। 20 प्रतिशत महिलाओं ने हाईस्कूल/हायर सेकेंडरी तक शिक्षा प्राप्त की है। 18 प्रतिशत महिलाएँ माध्यमिक शिक्षित हैं तथा 7 प्रतिशत महिलाएँ स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षित हैं।

तालिका क्रमांक 3

स्व सहायता समूह में कार्यरत महिला सदस्यों की पारिवारिक स्थिति का विवरण

क्र	पारिवारिक स्थिति	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	एकल परिवार	63	63%

2	संयुक्त परिवार	37	37%
	योग	100	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं में 63 प्रतिशत महिलाएँ एकल परिवार से तथा 37 प्रतिशत महिलाएँ संयुक्त परिवार से संबंधित हैं। इससे पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में एकल परिवार में रहने वाली महिलाओं की संख्या अधिक है।

तालिका क्रमांक 4

स्वयं सहायता समूह में कार्यरत महिला सदस्यों की आवश्यक संबंधी विवरण

क्रं	आवासीय स्थिति	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	कच्चा मकान	40	40%
2	पक्का मकान	28	28%
3	अर्द्ध कच्चा मकान	17	17%
4	किराए का मकान	15	15%
6	योग	100	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं में 40 प्रतिशत महिलाएँ कच्चे मकान में, 28 प्रतिशत महिलाएँ पक्के मकान में, 17 प्रतिशत महिलाएँ अर्धकच्चे मकान में तथा 15 प्रतिशत महिलाएँ किराये के मकान में निवास करती हैं। इससे पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में कच्चे मकान में रहने वाली महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है।

तालिका नंबर 5

बैंक खाते की स्थिति में सुधार का विवरण

स्व सहायता समूह का सदस्य बनने के पश्चात बैंक खाते की स्थिति में सुधार का विश्लेषण

बैंक खाते की स्थिति में स्थिति	समूह के सदस्य बनने से पहले पूर्व उत्तरदाताओं की संख्या	समूहकी सदस्य बनने के पश्चात उत्तरदाताओं की संख्या	खातों की संख्या में परिवर्तन	निष्कर्ष
हां	65	90	25	खाताधारकों की संख्या में वृद्धि
नहीं	35	10	25	बिना खाते वाली महिलाओं की संख्या में कमी

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह का सदस्य बनने के पश्चात महिलाओं की बैंकिंग सुविधाओं तक पहुँच में सुधार हुआ है। समूह बनने से पहले 65 महिलाओं के पास बैंक खाता था, जबकि समूह बनने के पश्चात यह संख्या बढ़कर 90 हो गई। इस प्रकार बैंक खाताधारक महिलाओं की संख्या में 25 की वृद्धि हुई। इससे स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ने तथा वित्तीय जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

तालिका क्रमांक 6

स्व सहायता समूह का सदस्य बनने के पश्चात महिलाओं की मासिक आय में परिवर्तन

मासिक आय	सदस्य से पूर्व सदस्यों की संख्या	सदस्यता के पश्चात सदस्यों की संख्या	संख्या में परिवर्तन	प्रतिशत मे परिवर्तन
2000-3000	53	15	38	71.70% कमी

3000-4000	**24**	**30**	**6**	**25% वृद्धि**
4000-8000	**19**	**45**	**26**	**136.84% वृद्धि**
10000 से आधिक	**4**	**10**	**6**	**150% वृद्धि**
योग	**100**	**100**	**0**	

तालिका से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात महिलाओं की मासिक आय में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। अध्ययन में शामिल 100 महिलाओं में से समूह बनने से पूर्व 53 प्रतिशत महिलाओं की मासिक आय 2,000 से 3,000 रुपये के बीच थी, जो समूह बनने के पश्चात घटकर 15 प्रतिशत रह गई। इसी प्रकार 3,000 से 4,000 रुपये मासिक आय वाली महिलाओं का प्रतिशत 24 से बढ़कर 30 प्रतिशत हो गया।

वहीं 4,000 से 8,000 रुपये मासिक आय वाली महिलाओं का प्रतिशत 19 से बढ़कर 45 प्रतिशत हो गया। इसके अतिरिक्त 10,000 रुपये से अधिक मासिक आय प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 4 से बढ़कर 10 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात महिलाओं की आय के स्तर में सुधार हुआ है। स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत, ऋण सुविधा, छोटे व्यवसाय एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो सकते हैं। इससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत होने के साथ-साथ उनमें आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावना भी विकसित होती है।

5 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में दंतेवाड़ा जिले के महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत 100 महिला उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों एवं विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरे हैं। अध्ययन में महिलाओं की पारिवारिक स्थिति का भी विश्लेषण किया गया, जिसमें 63 प्रतिशत महिलाएँ एकल परिवार तथा 37 प्रतिशत महिलाएँ संयुक्त परिवार से संबंधित पाई गईं। इससे अध्ययन क्षेत्र में पारिवारिक संरचना की स्थिति का पता चलता है। सामाजिक सशक्तीकरण के दृष्टिकोण से स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सामूहिक रूप से कार्य करने, विचारों का आदान-प्रदान करने, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने का अवसर प्रदान करते हैं। समूहों के माध्यम से महिलाओं में आपसी सहयोग, आत्मविश्वास तथा सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित होने की संभावनाएँ बढ़ती हैं।हालाँकि, महिलाओं के पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण के लिए अभी भी शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर, वित्तीय जागरूकता तथा बाजार से जुड़ाव को और अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार मासिक आय से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि समूह से जुड़ने के पश्चात महिलाओं की आय के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। पहले जहाँ 53 प्रतिशत महिलाओं की मासिक आय 2,000 से 3,000 रुपये के बीच थी, वहीं समूह बनने के पश्चात यह संख्या घटकर 15 प्रतिशत रह गई। इसके विपरीत 4,000 से 8,000 रुपये मासिक आय प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 19 से बढ़कर 45 प्रतिशत हो गया। इससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत मिलते हैं।

दंतेवाड़ा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास, जागरूकता, सामूहिकता एवं सामाजिक सहभागिता की भावना विकसित करने में सहायक हैं। इसलिए महिलाओं के समग्र विकास एवं ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के लिए स्वयं सहायता समूहों को और अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाना आवश्यक है।

6 संदर्भ ग्रंथ सूची

- **Tripathi Kalawati (2000)- "** Role of women in socio -economice development and urben Government" shelter, October-2000vol.4 (4).
- **Rao Radhakrishna(2001)-** " Kerala Model of women's Empowerment" Social Welfare ,February 2001.pp34-35.
- **सिंह कुशल गौतम 2007-** ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु स्वास्थ्य समूह योजना का महत्वअध्याय 6.
- **शर्मा सुभाष 2010-** महिला सशक्तिकरण एवं समग्र विकास एडीबी पब्लिक जयपुर 2010 पृष्ठ क्रमांक34.
- **शर्मा मंजू 2008-** 37 कार्यशील महिलाओं का समाज में बदलता स्वरूप राज पब्लिशिंग हाउस जयपुर.
- **विमला देवी 2020-** ग्रामीण महिलाओं के सशक्त विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान व समूह का राजनीतिक महत्व इंडियन जनरल ऑफ रिसर्च वॉल्यूम नंबर 9 इश्यू 11 नवंबर 2020 आईएसएसएन नंबर 2250 -1991. .
- **डॉक्टर श्रीवास्तव सुनीता 2020**- ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने का माध्यम स्वयं सहायता समूह
- **साहनी प्रतिभा 2021** -अंकुर बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली 110053
- **कुमारी सपना 2021-** महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण मिश्रा छात्र समूह का योगदान इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च 2021.international journal of Applied Research (6) 392-396.
- **भगत, मनोज (2022)**- ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका। बिलासपुर (छत्तीसगढ़): संकल्प पब्लिकेशन।
- **सेठी,अर्चना वर्मा ओमप्रकाश 2022-** छत्तीसगढ़ म सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण का अध्ययन दुर्ग एवं राजनांदगांव जिला का विशेष संदर्भ में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ खंड 28 2022
- **डॉक्टर सरिता 2023** स्वयं सहायता समूह में महिलाओं की आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.international journal of novel Research and development :vol-8 issue-6, June-2023.
- **चंद्राकर स्वीटी, डॉ समाज अनीता 2024**-महिला स्वयं सहायता समूह सदस्यों की आर्थिक स्थिति की अध्ययन innovation and intergrative research centre journal vol-2 issue-6 june-2024 page 40-49.
- **अंकित 2026-** स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद का एक अध्ययन. International journal of Trends in Emerging Research and development.vol-4,Issue-6,June-2026 page no-10-17
- **डॉक्टर मौर्य राजेश** मौर्य स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण
- योजना पत्रिका नारी शक्ति नए आयाम मासिक पत्रिका मार्च 2026
- कुरुक्षेत्र ग्रामीण प्रगति राष्ट्रीय समृद्धि मार्च 2026